GOVT. WOMEN POLYTECHNIC, AJMER (RAJ.)

MODEL CLASS TEST PAPER WITH ANSWERS

THEORY OF FASHION - I CD-103

निर्धारित समय :- 1 घंटा — 2018 — अधिकतम अंक - 15

TIME ALLOWED - 1 HOUR — MAX. MARKS - 15

1. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये : (Any three)
   Answer the following questions:

(i) ताने व बाने में अन्तर स्पष्ट कीजिये।
Differentiate between warp & weft.

(ii) परिधान उद्योग में माप सारिणी की उपयोगिता एवं महत्व
Utility and importance of measurements charts in garment industry.

(iii) टेलर्स टैक
Tailor's Tack

(iv) पेपर-पैटर्न बनाते समय क्या सावधानियाँ रखनी चाहिये।
What precautions are to be taken while making paper-pattern? (3×3)

2. फैशन एक कला है, से आप क्या समझते हैं।
What do you understand by 'Fashion is an Art'. 6

ANSWERS

Q.1.(i) ताने व बाने में अंतर स्पष्ट कीजिये :- व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारते हैं, अतः कपड़े में
Ans. अच्छी फिटिंग वाले वस्त्र ही Warp yarns तथा weft yarns का
बुनाई या weaving की प्रक्रिया के समय
अत्यधिक महत्व होता है, वस्त्र का निर्माण बुनने की प्रक्रिया से आरम्भ होता
है इसके लिये यह आवश्यक है कि वार्प धागों तथा वेफ्ट धागों में अन्तर ज्ञात
हो :-

WARP THREADS :- ये वे धागे होते हैं जो वस्त्र की बुनाई (FABRIC WEAVE) की लम्बाई
की दिशा बताते हैं इन्हें (ENDS) नाम से भी जाना जाता है। जितनी
लम्बाई का वस्त्र तैयार किया जाना है उसी अनुसार धागा वार्प-बीम पर तैयार करके
लपेट दिया जाता है, इनके लिये ज्यादा मजबूत धागों का प्रयोग किया जाता है जिससे
कि बुनाई के दौरान पड़ने वाले अतिरिक्त दबाव को ये धागे झेल सकें। इन धागों में
अधिक TWIST या ऐंठन भी दी जाती है, ये वस्त्र में सीधे ग्रेन या Straight Grain
को दर्शाते हैं।

WEFT THREADS :- ये धागे कपड़े की चौड़ाई की दिशा में चलते हैं इन्हें वेफ्ट या पिक
धागे भी कहा जाता है। वस्त्र को बुनने के लिये धागा बॉबिन या
शटल में भरकर वार्प यार्न के बीच में से गुजारा जाता है जिससे कपड़ा बुना जाता
है। वेफ्ट यार्न्स में Elasticity काफी अच्छी रहती है इस दिशा के बने कपड़े से
फ्रिल्स, फ्लाउन्सेस आदि बनाने पर अच्छी लटकन प्रदर्शित करते हैं। इन धागों
में अतिरिक्त ऐंठन नहीं दी जाती है।

(ii) Utility and Importance of measurements charts in garment Industry :- सुंदर परिधानों की उचित फिटिंग के लिये यह आवश्यक है कि वस्त्रों का नाप कैसे लिये जाये ताकि शारीरिक संरचना पर परिधानों की फिटिंग सही प्रकार से बैठे, प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक बनावट अलग प्रकार की होती है जिसका ध्यान माप लेते समय रखना पड़ता है। ये आवश्यकतायें माप-तालिका या Measurements charts के अनुसार वस्त्र तैयार करके पूर्ण की जाती हैं, Ready-Made garment Industries प्रमाणित नाप तालिका के अनुसार वस्त्रों की पेटर्न-मेकिंग व कटिंग का कार्य करती हैं अतः माप-तालिकाओं के अनुसार कार्य करना उनके अत्यधिक उत्पादन के लिये आवश्यक है, क्योंकि वे हर व्यक्ति के Personal Body Measurement को लेकर काम नहीं कर सकते। मापों के महत्व को देखते हुये हम कह सकते हैं कि अच्छे सिले हुये वस्त्र की फिटिंग से जो संतुष्टि ग्राहक को मिलेगी व मापों के महत्व को और बढ़ा देती है। अच्छी फिटिंग आने से वस्त्र आकर्षक बनता है तथा व्यक्ति की सुंदरता में चार चाँद लगा देता है। सही मापों से सिला हुआ वस्त्र अनावश्यक खर्चे बचाता है, तथा कपड़े की Wastage को भी रोकता है। Measurements charts के द्वारा हम नये Blocks की drafting कर सकते हैं तथा Design का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं।

(iii) Tailor's Tack - टैलर्स टैक

एक Dress को बनाने के लिये वस्त्र को कई स्तरों से गुजरना पड़ता है, इनके अंतर्गत वस्त्रों पर कटिंग व सिटीचिंग से संबन्धित कई निशान लगाने पड़ते हैं जिससे परिधान निर्माण सुगमता से हो सके। टैलर्स-टैक का अर्थ टाँकों या stitches की सहायता से Tacking करके निशान लगाने से प्रस्तुत करना होता है। Tailors Tack का निशान उन marks पर किया जाता है जहाँ पर हमें अत्यधिक फिटिंग की आवश्यकता होती है। इसके अंतर्गत Dart-line, pleats, Tucks, आदि को दर्शाने के लिये कच्चा-टाँका लगाकर कपड़े पर मार्क कर दिया जाता है, जब Pattern को वस्त्र पर से हटाया जाता है तब धागे के LOOPS दिखाई देने लगते हैं तथा Tailor उन निशानों को देखकर कपड़ा सिल देता है। सिलाई प्रक्रिया के दौरान नाप लेना, ड्राफ्ट बनाना, वस्त्र की कटिंग करना, वस्त्र की सजावट करना आदि कई प्रक्रियायें आती हैं जिन्हें पूरा करने के लिये आवश्यकतानुसार मार्किंग के तरीकों का इस्तेमाल किया जाता है। Tailor's-Tack का मुख्य उपयोग भारी, तथा पारदर्शी वस्त्रों पर भी किया जाता है जिन पर प्रायः अन्य मार्किंग तरीकों से Design को ट्रेस करने में कठिनाई आती है।

(iv) Precautions to be taken while making paper-pattern :-

वस्त्र व्यक्ति की अनिवार्य आवश्यकताओं में से एक है। प्राचीन काल में मनुष्य अपने शरीर को ढकने के लिये जानवरों की खाल, पत्तों की खाल आदि का प्रयोग करता था

परंतु धीरे-धीरे जैसे मानव सभ्यता का विकास होने लगा शरीर के आकार के अनुसार वस्त्र सिलने की शुरुआत हुई, कुछ समय पश्चात वस्त्रों की Design के अनुसार नापों के आधार पर उसकी आकृति का नमूना कागज पर बनाया जाने लगा जिसे Draft कहते हैं, तथा उन Drafts के आधार पर शरीर की आकृति के अनुसार अलग-अलग हिस्सों में पेपर पैटर्न तैयार करते समय निम्न आवश्यक बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिये:-

(a) पेपर-पैटर्न बनाते समय मजबूत व अच्छे कागज का प्रयोग करना चाहिये।

(b) पेपर-पैटर्न हमेशा FULL-SIZE का ही बनाना चाहिये।

(c) पेपर-पैटर्न बनाते समय अच्छे उपकरणों का इस्तेमाल करना चाहिये जैसे L-Square, French Curve, Leg-shaper, Scale, Inchtape आदि।

(d) Paper-Pattern को अच्छी तरह से परीक्षण करने के बाद ही काटना चाहिये।

(e) Paper-Pattern पर सभी Cutting-lines, seam lines, Knotches, Darts, Tucks, Pleats, grain-lines को मार्क करना चाहिये।

(f) Paper-Pattern बनाते समय उस पर कुछ Letters डाल दिये जाते हैं जिससे कि Pattern-pieces कटने के बाद आपस में न मिलें जैसे FRONT PORTION, CENTRE PORTION, BACK PORTION आदि, इनको भी काटने से पहिले मार्क कर देना चाहिये। यदि हम कुछ बातों का ध्यान रखेंगे तो हमारा Paper-Pattern एकदम सही बनेगा तथा उसी के अनुरूप हमारा Dress एकदम सही बनेगा।

Q.2. What do you understand by 'Fashion as an Art':-

Ans. मानव-मस्तिष्क के विचारों और भावों की अभिव्यक्ति को कला कहते हैं। कलायें प्राचीन काल से ही प्रचलित हैं, आधुनिक युग में कलाओं का प्रचलन बढ़ता ही जा रहा है, कला किसी भी क्षेत्र की सभ्यता एवं संस्कृति का परिचायक होती है तथा इसके कई रूप होते हैं जैसे, नृत्यकला, गायन, चित्रकला, वादन, आदि। सिलाई कला या Cutting तथा Stitching भी कला का ही एक रूप है, इसमें भी कला के सिद्धान्तों एवं तत्वों को उतना ही समावेश देखने को मिलता है जितना कि अन्य कलाओं में।

अच्छे वस्त्रों के निर्माण के लिये यह आवश्यक है कि कला के तत्वों का समावेश डिजाईनर द्वारा अपनी डिजाइनिंग में किया जाये जिससे कि Fashion एक कला है का रूप चरितार्थ हो सके। एक अच्छा Dress-Designer अपनी नई-नई परिकल्पनाओं के द्वारा Fashion को कला के रूप में स्थापित कर रहे हैं तथा Designer अपनी Creation (रचना) में रेखा, रूप, अन्तराल, आकृति, रंग व पोत तथा कला के अन्य सिद्धान्तों द्वारा नित नये प्रयोग करते हुये Fashion as an Art को प्रतिपादित करते हैं। वस्त्रों की बनावट में मुख्यतः कला के निम्न तत्वों का ध्यान रखकर Designers एक

अच्छी Art Creation को Develop करता है जिसके अन्तर्गत वह मुख्यतः रेखाओं का प्रयोग व्यक्ति की लंबाई, चौड़ाई तथा अनुपात एवं संतुलन का सामंजस्य प्रतिपादित करता है। रंगों का व्यक्तित्व के अनुसार प्रयोग एक Designer को उसके Creation की सफलता दिलाता है, Texture के सही प्रयोग से वस्त्रों की सतह का चयन Designing में कोमलता, भारीपन, खुरदरापन आदि का आभास कराता है इसी प्रकार Balance, Rythm, Harmony, Proportion आदि का उचित समावेश करके एक डिजाईनर अपने Creation को Fashion एक कला के रूप में स्थापित करता है।

K.K. Kunji
H.O.D. C.D.D.M.
G.W.P.C. Ajmer, (Raj.)